दिलों पर राज कर रही है 'रानी' बेटी

अरुण नैथानी

'पिताजी तांगा चलाते थे। उसकी कमाई से घर का खर्चा चलता था। तीन टाइम का खाना मिल पायेगा या नहीं, यह चिंता बराबर रहती थी। हम कच्चे घर में रहते थे। जब बारिश आती तो हमारी जान सूख जाती थी। पानी घर में घुस जाता था। तीन भाई-बहन मिलकर पानी निकालते थे। भगवान से प्रार्थना करते थे कि बारिश न हो। डर रहता था कि बारिश से घर धराशायी न हो जाए। माता-पिता पढ़े-लिखे नहीं थे। ऐसे में जब मैंने हॉकी खेलने की बात कही तो पहली बार मना हो गई। यह वह दौर था जब ग्रामीण परिवेश में महिलाओं की भूमिका घर तक ही सीमित थी। पड़ोसी-रिश्तेदार कहते थे कि लड़की हॉकी खेलेगी कम कपड़े पहनकर मैदान में दौड़ेगी हमारी नाक कटवाएगी भगवान का शुक्र है कि पिताजी मान गये। अच्छे जूते और हॉकी की किट सपना था। अच्छा पौष्टिक खाना तो दूर की बात थी। जब हॉकी एकेडमी गई तो पांच सौ एम.एल. दूध ले जाना होता था। घर से दौ सौ एम. एल. दूध मिल पाता था, तीन सौ ग्राम पानी डालकर ले जाती थी। बहुत मुश्किल वक्त था।'

यह कहानी है देश-दुनिया के दिलों में राज करने वाली हरियाणा के शाहाबाद मारकंडा में जन्मी रानी रामपाल की जो आज भारतीय महिला हॉकी टीम की उम्दा-प्रेरक कप्तान है। शायद कहीं मां-बाप के अवचेतन में ऐसी होनहार बेटी का सपना रहा होगा, तभी तो उसका नाम रानी रखा। आज वह रानी है, हॉकी की रानी। ये बात तो दुनिया ने भी मानी है। पिछले दिनों उसे भारत का चौथा बड़ा नागरिक सम्मान पद्मश्री देने की घोषणा हुई। वर्ष 2016 में उन्हें अर्जुन अवॉर्ड दिया गया था। पिछले दिनों उन्हें 'वर्ल्ड गेम्स एथलीट ऑफ द ईअर अवार्ड' देने की घोषणा की गई। पूरी दुनिया में इसके लिये वोटिंग होती है। यह प्रतिष्ठित सम्मान पाने वाली वह भारत की ही नहीं, दुनिया की पहली महिला हॉकी खिलाड़ी है।

कुरुक्षेत्र के शाहाबाद मारकंडा में 4 दिसंबर 1994 को जन्मी रानी रामपाल की कहानी हिम्मत से तमाम कष्टों और दुश्वारियों पर जीत हासिल करके लक्ष्य हासिल करने वाली नायिका की है। पिताजी तांगा चलाते थे। एक भाई दुकान में सहायक के तौर पर और दूसरा भाई कारपेंटर का काम करता रहा। ऐसे परिवेश में बड़े सपने लेकर उन्हें पूरा करने निकली रानी। वह भी ऐसे समाज में जहां लड़कियों का हाकी खेलना नामुमकिन था। रिश्तेदारों व पड़ोसियों के ताने होते थे। कल जो कहते थे कि छोटी स्कर्ट पहनकर मैदान में दौड़गी, घर की इज्जत खराब करेगी, आज वही उसकी पीठ थपथपाते हैं कि हमारी शाहाबाद की बेटी है। हमारी नाक है। रानी ने भी मां-बाप को सुख देने के लिये शाहाबाद में खूबसूरत सपनों का घर बनवाया है, जहां ओलंपिक के प्रतीक पांच रिंग बने हैं।

किन मुश्किलों से जूझकर रानी आगे बढ़ी, कल्पना करना कठिन है। लेकिन उसे हमेशा से पता था कि देश के लिये हॉकी खेलना है। भले ही पिता हॉकी किट व जूते खरीदने की हैसियत में न थे, मगर आखिरकार पिता ने रानी का मन रखा और उसे हॉकी खेलने की अनुमति थी। उसने पिता से वायदा किया कि जब भी कभी आपको लगेगा कि मैं कुछ गलत कर रही हूं तो मैं हॉकी छोड़ दूंगी। उसके कैरियर संवारने में कोच सरदार बलदेव सिंह का बड़ा योगदान रहा। उनकी देखरेख में शाहाबाद हॉकी अकादमी में रानी के प्रशिक्षण की शुरुआत हुई। उन्होंने रानी और हॉकी का साथ दिया। हॉकी की किट खरीदने से लेकर जूते खरीदने तक। उसके खेल से खुश होकर एक बार उन्होंने एक दस का नोट दिया था। गुरु द्रोणाचार्य ने उस पर लिख दिया था-'तुम देश का भविष्य हो।' उस नोट को रानी ने बहुत दिनों तक संभालकर रखा। मगर वह गरीबी का ऐसा दौर था कि उस दस के नोट को एक दिन खर्च करना पड़ा। चंडीगढ़ में ट्रेनिंग हुई तो उसे बलदेव सिंह ने अपने घर में रखा। खाने-पीने की व्यवस्था की। देश ने उन्हें द्रोणाचार्य सम्मान दिया।

जब रानी चौदह साल की उम्र में भारतीय महिला हॉकी टीम में शामिल हुई तो वह देश की सबसे कम उम्र की हॉकी खिलाड़ी थी। उसने 2009 में भारत को एशिया कप में रजत पदक दिलाने में अहम भूमिका निभाई। 2013 में रानी की बड़ी भूमिका से जूनियर महिला विश्व कप हाकी में 38 साल बाद भारत को कांस्य पदक मिला। उसे 'प्लेयर ऑफ दि टूर्नामेंट' का अवार्ड मिला। आमतौर पर वह सेंटर फॉरवर्ड के रूप में खेलती है। यह रानी का खेल और नेतृत्व ही है कि भारतीय हॉकी टीम ने एशियन गेम्स, 2018 में रजत, एशिया कप 2017 में स्वर्ण और एशियन चैंपियन्स ट्राफी 2018 में रजत पदक हासिल किया। अब उनके नेतृत्व में भारतीय हाकी टीम ने लगातार दूसरी बार ओलंपिक के लिये क्वॉलीफाई किया है। टीम के हौसले इतने बुलंद हैं कि पिछले दिनों ओलंपिक चैंपियन ब्रिटेन को भी मात दे दी। रानी को इस बात का श्रेय भी है कि उसने हॉकी टीम की सुप्त शक्ति को जाग्रत करके जीत की भूख बढ़ा दी। वह देश के लिये ढाई सौ के करीब मैच खेल चुकी है। वाकई रानी बेटी आज हाकी व दुनिया के दिलों में राज कर रही है।

संपादकीय

सहिष्णु माहौल की जरूरत

देशभर के प्रमुख विश्वविद्यालयों में वैचारिक लड़ाई चरम पर है। विचारधाराओं के संघर्ष से उन्माद और वैमनस्य उपज रहा है। परिणामत- पठन-पाठन ठप है, और संकायों में ताले जड़े हैं। आपसी मतभेद, दमनकारी मनभेद में बदल गए हैं, और परिसर खूनी जंग के अखाड़े बन गए हैं। वैचारिक असहिष्णुता का आलम यह है कि कल तक जो सहपाठी खानपान की साझी संस्कृति के परिचायक थे, आज परस्पर खून के प्यासे हो गए हैं। खुलकर वैचारिक मतभेद सामने रखने वाले सोशल मीडिया के माध्यम से एक-दूसरे पर तरह-तरह के घृणित पंथ आधारित आरोप मढ़ रहे हैं। भाजपा के सत्तारूढ़ होने के बाद से मतभेद की ये स्थितियां ज्यादा मुखर हुई हैं।

दक्षिणपंथी और वामपंथियों के बीच की खाई पहले से ज्यादा गहरी हुई है। 1990 के दशक में साम्यवाद के अंत और कम्युनिस्ट में उदारतावाद के उदय से वामपंथ की नींव हिल गई। भारत में वामपंथ की अस्मिता पर ग्रहण लग गया जिस बचाने के लिए कई क्षेत्रों में उग्र-वामपंथ और नक्सलवाद का फैलाव हुआ। आज जेएनयू को वामपंथी अस्मिता संकट के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। भारतीय लोकतंत्र वैचारिक प्रतिस्पर्धा को खुला मंच देता है। हमारा संविधान इसे सिरे से स्वीकारता भी है।

भारत हजारों वर्षों से वयम् ब्रह्मास्मि (हम सभी ब्रह्म हैं) और वसुधैव कुटुबंकम (समूची धरती परिवार है) की विचारधारा को आत्मसात करता आया है। इसमें अनंत विचाराधाराओं, संस्कृतियों, मतों, पंथों और पूजा-पद्धतियों को आश्रय मिला। आजादी के पूर्व और पश्चात भी सभी धर्म और संप्रदाय के लोग एकत्व भाव से समरसतापूर्ण जीवन जीते थे। सेक्युलरिज्म व सहिष्णुता को आधुनिक भारत में 'आइडिया ऑफ इंडिया' के रूप में परिभाषित किया जाता है, लेकिन प्राचीन भारत में असंख्य पंथों एवं असीमित विभिन्नताओं वाले सामाजिक परिवेश का अस्तित्व प्रमाणित करता है कि जब यूरोप सेक्युलरिज्म और सहिष्णुता से अपरिचित था तब भारत में ये संकल्प सामाजिक-संस्कृति की आधारशिला थे।

न केवल भारत बल्कि दुनियाभर के छात्र हजारों की संख्या में हर साल यहां आते हैं। आजादी के बाद निर्मित 'नेहरूवियन मॉडल' से विकसित और प्रबंधित यह संस्थान अपनी शुरुआत से ही चर्चा के केंद्र में रहा है। एक वक्त था जब पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी तक को कैम्पस में आकर छात्र संगठनों की बात गंभीरता से सुननी पड़ती थी। उनकी मांगों के समक्ष झुकना पड़ता था। तब सभी विचारधाराओं को एकसमान रूप से उभरने और अपनी जड़ें जमाने का अवसर दिया जाता था। हालांकि तब एकाध छात्र संगठन को छोड़कर वामपंथ का ही दबदबा था। 90 के दशक में अटल बिहारी के प्रधानमंत्री बनने के बाद एबीवीपी जैसे छात्र संगठनों ने अपना विस्तार करना शुरू किया। संबंधित संस्थानों सहित छात्रों को मिलकर प्रयास करने होंगे ताकि विचारों के परस्पर आदान-प्रदान और सौहार्दपूर्ण व्यावहार के लिए छात्रों को खुला मंच मिले और उनका सर्वांगीण नैसर्गिक विकास हो सके।

सू- दोकू

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

ताइवान को मान्यता मिले

अवधेश कुमार

ताइवान के राष्ट्रपति चुनाव में श्रीमती साई इंग वेन को दूसरी बार मिली भारी जीत ने किस तरह चीन को परेशान किया है, इसके प्रमाण लगातार सामने आ रहे हैं।

चीन ने उन सारे देशों की कटु आलोचना की जिनने साइ को जीत की बधाई दी थी। अमेरिका के विदेश मंत्री माइक पोम्पियो के साथ ही ब्रिटेन और जापान के शीर्ष राजनयिकों ने बयान जारी कर साई को बधाई दी।

चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गेंग शुआंग ने कहा, 'चीनी पक्ष इस पर कड़ी नाराजगी जाहिर करता है और इसका विरोध करने का संकल्प लेता है। हम ताइवान एवं ऐसे देशों के बीच किसी भी तरह के आधिकारिक संवाद का विरोध करते हैं, जिनका चीन के साथ कूटनीतिक संबंध हैं।' चीन के सरकारी मीडिया ने साई की जीत पर ही प्रश्न खड़ा कर दिया। सरकारी सवाद समिति शिन्हुआ ने कहा कि साई और उनकी डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी (डीपीपी) ने वोट हासिल करने के लिए ठगी, दमन और धमकी का सहारा लिया। शिन्हुआ ने साई पर वोट खरीदने का आरोप लगाया। कहा कि चुनाव परिणामों के लिए बाहरी ताकत जिम्मेदार हैं। चीन की बिलबिलाहट स्वाभाविक है क्योंकि साई ने चीन की चाहत के विपरीत अकेले 57 प्रतिशत यानी 84 लाख मत पाए। स्वयं को चीनी अधिनायकवाद के विरु द्ध लोकतांत्रिक मूल्यों तथा ताइवान की आजादी को हर हाल में बनाए रखने वाले नेता के रूप में प्रस्तुत किया था।

स्थिति की गंभीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि राष्ट्रपति साई को कहना पड़ा है कि चीन ने उनके देश पर हमला किया तो पेइचिंग उसकी बड़ी कीमत चुकाएगा। साई का मुकाबला कुओमिनतांग पार्टी के खान ग्वो यी से था जिन्होंने चीन के साथ तनाव कम करने का वादा किया था जबकि साई ने चीन के साथ नरमी से इनकार। उनका कहना है कि चीन ताइवान पर काबिज होने के विचार को रद्द करने के बाद संबंधों के लिए आगे आए। हांगकांग में चीन विरोधी आंदोलनों ने लोगों के मनोविज्ञान पर व्यापक असर डाला। चीन ने ताइवान के सामने हांगकांग की तरह का राजनीतिक फॉर्मूला पेश किया था, जिस पर साई ने कहा कि एक देश दो व्यवस्था हॉन्गकॉन्ग में पूरी तरह नाकाम हो गई है। उन्होंने पिछले साल जून में हॉन्गकॉन्ग विरोध प्रदशनों के दौरान कहा था कि जो भी ताइवान की संप्रभुता और लोकतंत्र को कमज़ोर करने या राजनीतिक सौदेबाजी के लिए इस्तेमाल करेगा, वो असफल हो जाएगा। यह भी कहा कि उम्मीद है कि बीजिंग प्रशासन समझेगा कि ताइवान और यहां की चुनी हुई सरकार धमकी के दबाव में नहीं आएगी। चुनाव में मुख्य नारा चीनी साम्राज्यवाद के खतरे से लोकतांत्रिक ताइवान को बचाना बन गया था। साई इसकी प्रतीक थीं। ताइवान के साथ अतीत का विडंबनापूर्ण अध्याय जुड़ा है। मजबूत अर्थव्यवस्था वाला देश होने के बावजूद उसके अंदर असुरक्षा बोध हमेशा रहा है। चीन की लगातार धमकियों के कारण। चीन कहता है कि ताइवान को हर हाल में अपना भाग बनाना है। भले सैन्य कार्रवाई क्यों न करना पड़े।

ताइवान को चीन में मिलाने के मंसूबों पर इंग-वेन ने तीखे हमले बोले हैं। यह ताइवान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय विमर्श बन गया जिसका लाभ साई को मिला है। साई के नेतृत्व में ही ताइवान की संसद ने एक जनवरी को चीन के खतरे को देखते हुए एंटी-इन्फिल्ट्रेशन लॉ पास किया था। इस कानून के खिलाफ चीन ने हमला बोला और दोनों देशों के तनाव चरम पर पहुंच गए। चीन कहता है कि साई की डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी ताइवान को औपचारिक रूप से स्वतंत्र देश बनाने को लेकर काम कर रही है, जिसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। 1949 की क्रांति में चीन ने कुओमिनतांग को उखाड़ फेंका और कम्यनिस्ट राज कायम किया। च्यांग काई शेक ताइवान भाग गए और वहां उनका लंबा शासन रहा। चीन का आधिकारिक नाम है पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना और जिसे ताइवान के नाम से जानते हैं, उसका आधिकारिक नाम है रिपब्लिक ऑफ चाइना। दोनों स्वयं को असली चीन मानते हैं। एक दूसरे की संप्रभुता को मान्यता नहीं देते।